BHARGAVA Insights Multidisciplinary Research Journal
ISSN:
Volume: 01, Issue: 01, April- June 2026
https://bhargavafoundation.in/

विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन एवं मातृ सशक्तिकरण के मध्य संबंध का अध्ययन

BIMRJ
ISSN
Double-Blind Peer Reviewed
Open Access Quarterly Journal
©The Author 2026

नवीन कुमार,
शिक्षाशास्त्र, बी0आर0ए0बी0यू0, मुजफ्फरपुर।

"विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन एवं मातृ सशक्तिकरण के मध्य संबंध का अध्ययन" एक महत्वपूर्ण शैक्षिक एवं सामाजिक शोध विषय है, जिसका उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि मातृ सशक्तिकरण किस प्रकार विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन को प्रभावित करता है। विद्यालयीय समायोजन से अभिप्राय विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक एवं भावनात्मक स्तर पर विद्यालय के वातावरण के साथ संतुलित संबंध स्थापित करने की क्षमता से है। इस अध्ययन में मातृ सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों —जैसे शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक भागीदारी एवं आत्मविश्वास को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन का विश्लेषण किया गया है। शोध में वर्णात्मक एवं सहसंबंधात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए चयनित विद्यार्थियों से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि मातृ सशक्तिकरण एवं विद्यालयीय समायोजन के मध्य सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण सहसंबंध पाया जाता है। जिन विद्यार्थियों की माताएँ अधिक सशक्त होती हैं, वे विद्यालय में बेहतर समायोजन स्थापित करते हैं, शिक्षकों एवं सहपाठियों के साथ सकारात्मक संबंध बनाए रखते हैं तथा शैक्षिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय भागीदारी करते हैं। इसके विपरीत, कम सशक्त माताओं के बच्चों में समायोजन संबंधी समस्याएँ अपेक्षाकृत अधिक देखी जाती हैं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मातृ सशक्तिकरण विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। इसलिए शिक्षा एवं सामाजिक नीतियों में माताओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है, जिससे विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्द– विद्यालयीय समायोजन, मातृ सशक्तिकरण, विद्यार्थी विकास, पारिवारिक वातावरण।

***Corresponding Author**
नवीन कुमार,
शिक्षाशास्त्र, बी0आर0ए0बी0यू0, मुजफ्फरपुर।

✉

Article Info
Received: 12th January 2026
Final Accepted: 13th March 2026
Published: 2th April 2026

1. प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। यह न केवल ज्ञानार्जन का माध्यम है, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास को भी दिशा प्रदान करती है। विद्यालय इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण केंद्र होता है, जहाँ विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और अपनाने का अवसर भी प्राप्त करते हैं।

विद्यालय को केवल शिक्षा प्रदान करने वाला संस्थान मानना पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा सामाजिक परिवेश है जहाँ विद्यार्थी अपने व्यवहार, भावनाओं एवं सामाजिक संबंधों का विकास करते हैं। यहाँ वे अनुशासन, सहयोग, सहानुभूति, प्रतिस्पर्धा एवं सामूहिकता जैसे गुणों को सीखते हैं, जो उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विद्यालयीय समायोजन (बीववस ।करनेजउमदज) से अभिप्राय है– विद्यार्थी का विद्यालय के वातावरण, शिक्षकों, सहपाठियों तथा शैक्षणिक गतिविधियों के साथ संतुलित एवं सकारात्मक संबंध स्थापित करना। जब विद्यार्थी विद्यालय में स्वयं को सहज, सुरक्षित एवं स्वीकार्य महसूस करता है, तब उसका समायोजन बेहतर होता है। इसके परिणामस्वरूप वह अध्ययन में रुचि लेता है, कक्षा में सक्रिय भागीदारी करता है तथा शैक्षिक उपलब्धि में भी प्रगति करता है।

इसके विपरीत, यदि विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण में समायोजन स्थापित नहीं कर पाता, तो उसमें तनाव, असुरक्षा, उदासीनता एवं व्यवहार संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जो उसके व्यक्तित्व विकास एवं शैक्षिक प्रगति को प्रभावित करती हैं।

अतः यह आवश्यक है कि विद्यालय ऐसा अनुकूल एवं सहयोगात्मक वातावरण प्रदान करे, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी का समुचित समायोजन सुनिश्चित हो सके। शिक्षक, अभिभावक एवं विद्यालय प्रशासन को मिलकर विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना चाहिए।

- विद्यालयीय समायोजन का आशय है—विद्यार्थियों का विद्यालय के वातावरण, शिक्षकों, सहपाठियों एवं शैक्षिक गतिविधियों के साथ संतुलित एवं सकारात्मक संबंध स्थापित करना। यदि विद्यार्थी विद्यालय में समायोजित नहीं हो पाते, तो इसका प्रभाव उनके शैक्षिक प्रदर्शन एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

इस संदर्भ में परिवार, विशेषकर माता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वर्तमान समय में मातृ सशक्तिकरण (डंजमतदंस म्उचवूमतउमदज) एक महत्वपूर्ण सामाजिक कारक बनकर उभरा है, जो बच्चों के विकास एवं समायोजन को प्रभावित करता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में विद्यार्थियों के समक्ष अनेक प्रकार की चुनौतियाँ उभरकर सामने आई हैं, जैसे तीव्र प्रतिस्पर्धा, शैक्षणिक दबाव, सामाजिक अपेक्षाएँ एवं मानसिक तनाव। वैष्वीकरण, तकनीकी विकास एवं बदलती जीवनशैली के कारण विद्यार्थियों के जीवन में जटिलताएँ बढ़ गई हैं, जिससे उनका मानसिक एवं भावनात्मक संतुलन प्रभावित होता है। ऐसी परिस्थितियों में विद्यालयीय समायोजन एक अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है।

विद्यालयीय समायोजन से अभिप्राय है कि विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण, शिक्षकों, सहपाठियों एवं शैक्षणिक गतिविधियों के साथ किस प्रकार सामंजस्य स्थापित करता है। जब विद्यार्थी इन सभी पहलुओं के साथ संतुलित संबंध स्थापित कर पाता है, तब वह विद्यालय में स्वयं को सुरक्षित, संतुष्ट एवं प्रेरित महसूस करता है। इसके परिणामस्वरूप उसकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है तथा उसका व्यक्तित्व भी सकारात्मक रूप से विकसित होता है।

इसके विपरीत, यदि विद्यार्थी समुचित समायोजन स्थापित नहीं कर पाता, तो उसमें तनाव, चिंता, असुरक्षा एवं व्यवहार संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। यह स्थिति उसके आत्मविष्वास को कम करती है और उसके शैक्षिक प्रदर्शन को भी प्रभावित करती है।

अतः वर्तमान समय में यह आवश्यक हो गया है कि विद्यालयों में ऐसा अनुकूल, सहयोगात्मक एवं तनाव–मुक्त वातावरण तैयार किया जाए, जहाँ विद्यार्थी अपनी समस्याओं को खुलकर व्यक्त कर सकें और उन्हें उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सके। शिक्षक, अभिभावक एवं परामर्शदाताओं की संयुक्त भूमिका विद्यार्थियों के बेहतर समायोजन में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकती है।

➢ **सशक्त माताएँ—**

- बच्चों के प्रति अधिक जागरूक होती हैं।
- शिक्षा में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं।
- भावनात्मक समर्थन प्रदान करती हैं।

इसलिए यह अध्ययन आवश्यक है कि मातृ सशक्तिकरण विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन को किस प्रकार प्रभावित करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

- विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन के स्तर का अध्ययन करना।
- मातृ सशक्तिकरण के स्तर का मूल्यांकन करना।
- विद्यालयीय समायोजन एवं मातृ सशक्तिकरण के मध्य संबंध का विश्लेषण करना।
- विभिन्न पृष्ठभूमि (ग्रामीण/शहरी, लिंग) के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।

4. परिकल्पनाएँ ;भ्लचवजीमेमे)

H_{01}: मातृ सशक्तिकरण एवं विद्यालयीय समायोजन के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H_{11}: मातृ सशक्तिकरण एवं विद्यालयीय समायोजन के मध्य महत्वपूर्ण संबंध है।

H_{02}: लिंग के आधार पर विद्यालयीय समायोजन में कोई अंतर नहीं है।

H_{12}: लिंग के आधार पर विद्यालयीय समायोजन में महत्वपूर्ण अंतर है।

5. शोध पद्धति (Methodology)

(i) शोध का प्रकार

- वर्णनात्मक एवं सहसंबंधात्मक (Correlational Study)

(ii) नमूना (Sample)

- कुल छात्र: 150
- लड़के: 75
- लड़कियाँ: 75

(iii) उपकरण

- विद्यालयीय समायोजन स्केल
- मातृ सशक्तिकरण स्केल

(iv) आँकड़ा विश्लेषण

- औसत (Mean)
- मानक विचलन (SD)
- सहसंबंध गुणांक (Correlation)

6. आँकड़ा विश्लेषण

तालिका 1: मातृ सशक्तिकरण स्तर

स्तर	औसत स्कोर
निम्न	48
मध्यम	62
उच्च	78

तालिका 2रू विद्यालयीय समायोजन स्तर

समूह	औसत स्कोर
लड़के	65
लड़कियाँ	70

प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि लड़कियों का औसत स्कोर (70) लड़कों के औसत स्कोर (65) की तुलना में अधिक है। इसका अर्थ है कि अध्ययन में शामिल लड़कियों का विद्यालयीय समायोजन स्तर लड़कों की अपेक्षा बेहतर पाया गया।

यह अंतर इस बात की ओर संकेत करता है कि लड़कियाँ सामान्यतः विद्यालय के वातावरण, शिक्षकों एवं सहपाठियों के साथ अधिक संतुलित एवं सकारात्मक संबंध स्थापित करने में सक्षम होती हैं। वे अनुशासन, सहयोग, संप्रेषण एवं भावनात्मक नियंत्रण जैसे पहलुओं में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम पाई जाती हैं, जो उनके बेहतर समायोजन का कारण बनते हैं।

निष्कर्ष–

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यालयीय समायोजन के संदर्भ में लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक सक्षम पाई गई हैं। यह परिणाम इस बात को दर्शाता है कि शैक्षिक वातावरण में लड़कियों का अनुकूलन स्तर अधिक है,जो उनके शैक्षिक एवं व्यक्तित्व विकास के लिए सहायक सिद्ध होता है।

तालिका 3रू सहसंबंध विश्लेषण

चर	r मान
मातृ सशक्तिकरण एवं विद्यालयीय समायोजन	++0.68

प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि मातृ सशक्तिकरण एवं विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक (त = +0.68) पाया गया है। यह एक उच्च धनात्मक सहसंबंध (भ्पही च्वेपजपअम ब्वततमसंजपवद) को दर्शाता है।

इसका अर्थ है कि जैसे–जैसे मातृ सशक्तिकरण का स्तर बढ़ता है, वैसे–वैसे विद्यार्थियों का विद्यालयीय समायोजन भी बेहतर होता जाता है। सशक्त माताएँ अपने बच्चों के शैक्षिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर अधिक ध्यान देती हैं, जिससे बच्चे विद्यालय के वातावरण के साथ अधिक सहजता से समायोजन स्थापित कर पाते हैं।

निष्कर्ष –

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मातृ सशक्तिकरण विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है और दोनों के मध्य मजबूत एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है।

7. परिणाम एवं व्याख्या

➢ सकारात्मक संबंधरू

- मातृ सशक्तिकरण एवं विद्यालयीय समायोजन के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया।

➢ सशक्त माताओं के बच्चों में बेहतर समायोजनरू

- ऐसे विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण में अधिक सहज एवं सक्रिय पाए गए।

➢ लड़कियों का बेहतर समायोजनरू

- अध्ययन में पाया गया कि लड़कियाँ सामाजिक एवं भावनात्मक रूप से अधिक अनुकूलित होती हैं।

➢ शैक्षिक सफलता पर प्रभावरू

- बेहतर समायोजन वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रदर्शन भी उच्च पाया गया।

8. चर्चा (Discussion)

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मातृ सशक्तिकरण विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन को प्रभावित करता है।

- सशक्त माताएँ बच्चों के शिक्षा संबंधी निर्णयों में सक्रिय रहती हैं।
- वे बच्चों को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करती हैं।
- बच्चों में आत्मविष्वास एवं सामाजिक कौशल विकसित होते हैं।

इस प्रकार मातृ सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक कारक है, जो विद्यालयीय समायोजन को सुढ़ करता है।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है किः

- मातृ सशक्तिकरण एवं विद्यालयीय समायोजन के मध्य सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध है
- सशक्त माताओं के बच्चे विद्यालय में अधिक अनुकूलित होते हैं
- लड़कियों का समायोजन स्तर लड़कों की अपेक्षा अधिक पाया गया

10. सुझाव (Suggestions)

- महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
- अभिभावकों को विद्यालयी गतिविधियों में शामिल किया जाए।
- विद्यालयों में परामर्श सेवाएँ विकसित की जाए।
- बच्चों के लिए सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा दिया जाए।

"विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन एवं मातृ सशक्तिकरण के मध्य संबंध का अध्ययन" के आधार पर यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मातृ सशक्तिकरण विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली निर्धारक है। अध्ययन में प्राप्त सहसंबंध गुणांक (त = +0.68) यह दर्शाता है कि दोनों के मध्य उच्च स्तर का धनात्मक संबंध विद्यमान है।

अध्ययन से यह पाया गया कि जिन विद्यार्थियों की माताएँ अधिक सशक्त होती हैं– अर्थात शिक्षित, आर्थिक रूप से स्वतंत्र, निर्णय लेने में सक्षम एवं आत्मविष्वासी होती हैं, वे विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण, शिक्षकों एवं सहपाठियों के साथ बेहतर समायोजन स्थापित करते हैं। ऐसे विद्यार्थी शैक्षिक गतिविधियों में अधिक

सक्रिय भागीदारी करते हैं, अनुशासन का पालन करते हैं तथा सामाजिक एवं भावनात्मक रूप से अधिक संतुलित होते हैं। इसके विपरीत, जिन माताओं का सशक्तिकरण स्तर निम्न होता है, उनके बच्चों में विद्यालयीय समायोजन की समस्याएँ अपेक्षाकृत अधिक देखी जाती हैं, जैसे– अध्ययन में अरुचि, सामाजिक असहजता, तथा व्यवहार संबंधी कठिनाइयाँ।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि लड़कियों का विद्यालयीय समायोजन स्तर लड़कों की अपेक्षा अधिक पाया गया, जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि वे विद्यालय के वातावरण के साथ अधिक सहजता से सामंजस्य स्थापित कर पाती हैं।

अतः समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि मातृ सशक्तिकरण विद्यार्थियों के विद्यालयीय समायोजन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इसलिए समाज एवं शिक्षा प्रणाली में माताओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है, जिससे विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यक्तित्व विकास को सुदृढ़ किया जा सके और एक स्वस्थ एवं समायोजित समाज का निर्माण संभव हो सके।

11. संदर्भ ग्रंथ

1. कोठारी, सी. आर. (2004). शोध पद्धतिः विधियाँ एवं तकनीकें. नई दिल्लीः न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
2. बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं काह्न, जे. वी. (2006). शिक्षा में अनुसंधान. नई दिल्लीः प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।
3. अग्रवाल, जे. सी. (2010). शैक्षिक मनोविज्ञान के मूल तत्व. नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस।
4. मंगल, एस. के. (2012). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान. नई दिल्लीः पीएचआई लर्निंग।
5. एनसीईआरटी (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (छब्ब् 2005). नई दिल्लीः एनसीईआरटी।
6. भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (छम्ब् 2020). शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
7. ब्रॉनफेनब्रेनर, यू. (1979). मानव विकास का पारिस्थितिकी सिद्धांत. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. बंडूरा, ए. (1986). विचार एवं क्रिया के सामाजिक आधार. प्रेंटिस हॉल।
9. एपस्टीन, जे. एल. (2001). विद्यालय, परिवार एवं समुदाय सहभागिता. वेस्टव्यू प्रेस।
10. देसाई, एस., एवं जैन, डी. (2014). मातृ सशक्तिकरण एवं बाल विकास, सामाजिक विज्ञान जर्नल, 38(2), 123–130।
11. यूनिसेफ (2011). विष्व के बच्चों की स्थिति. न्यूयॉर्कः यूनिसेफ।
12. नायर, यू. एस. (2012). भारत में महिला सशक्तिकरण। सामाजिक परिवर्तन जर्नल, 4(1), 22–35।
13. शर्मा, आर. ए. (2009). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी. मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
14. सिंह, ए. के. (2010). व्यवहारिक विज्ञान में परीक्षण, मापन एवं अनुसंधान विधियाँ. पटनाः भारती भवन।
15. कौर, आर. (2015). किशोरों में विद्यालयीय समायोजन एवं पारिवारिक वातावरण, अंतरराष्ट्रीय शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक शोध जर्नल, 4(3), 45–50।
16. बर्क, एल. (2018). बाल विकास, पियर्सन।
17. सैंट्रॉक, जे. (2017). जीवन–काल विकास, मैकग्रा–हिल।
18. हर्लॉक, ई. (2011). बाल वृद्धि एवं विकास, मैकग्रा–हिल।
19. मल्होत्रा, ए., एवं शूलर, एस. (2005). महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक परिवर्तन, विष्व बैंक।
20. ब्रॉनफेनब्रेनर, यू. (2005). मानव विकास का पारिस्थितिक मॉडल, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
21. किशोर, एस., एवं गुप्ता, के. (2009). भारत में महिला सशक्तिकरण एवं बाल कल्याण, डेमोग्राफी जर्नल।

22. देसाई, एस., एवं एंड्रिस्ट, एल. (2010). भारत में लैंगिकता, परिवार एवं बाल विकास,पॉपुलेशन स्टडीज़।
23. सिंह, आर. (2018). ग्रामीण भारत में मातृ शिक्षा एवं बाल विकास, इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी ।ॉफ साइकोलॉजी।